I

Date 30/1/2021.

Lecture Series No:- 57.

Online class.
Date- 9/2/2022,
Day-
Time- 10:20 to 10:50 A.M

TOPIC.
(1) Prabhakar,

Dr. Sunita Kumari
Depart. of philosophy.
B.A Part - I
Paper - I (H.)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

Ans:-

मीमांसा दर्शन में ज्ञान का स्वतः प्रमाण माना गया है। कुमारिल का मत है कि ज्ञान का प्रामाण्य उसके बोधस्वरूप होने में है और ज्ञान का अप्रमाण्य कारणगत दोष में होता है। ज्ञान ज्ञान स्वतः प्रमाण होता है। उसका अप्रमाण्य तब ज्ञात होता है जब उसके कारणों में दोषों का ज्ञान होता है।

जब कोई ज्ञान उत्पन्न होता है। तब उसमें उसकी सत्यता का गुण भी अन्तर्भूत रहता है। किसी दूसरे ज्ञान के कारण उसका प्रमाण्य नहीं होता। प्रत्यक्ष, अनुमान आदि प्रमाणों के द्वारा होता है। शंकर ने मोक्ष को सिर्फ

P.T.O.

(2)

उत्पन्न होता है। इसकी सत्यता में स्वभावत: हम बिना जाँच-पड़ताल के विश्वास करने लगते हैं। ज्ञान का प्रामाण्य उस ज्ञान की उत्पादित सामग्री में ही विद्यमान रहता है। – प्रमाण स्वत: उत्पद्यते ज्योंही ज्ञान उत्पन्न होता है, त्योंहि उसके प्रमाण्य का भी ज्ञान हो जाता है। प्रमाण्य स्वत: स्तत्व। परन्तु ज्ञान के मिथ्यात्व का ज्ञान हमें अनुमान से होता है साधारणत: दूसरें ज्ञान के द्वारा यह मालूम होता है कि ज्ञान भ्रमपूर्ण है। दूसरे शब्दों में

उस ज्ञान के आधार में कोई त्रुटि है। ऐसी अवस्था में आधार के दोष से हम ज्ञान में मिथ्या होने का अनुमान करते हैं।

कुमारिल की तरह प्रभाकर का भी मत है कि ज्ञान सदैव स्वत: प्रमाण होता है, परन्तु जब वस्तु के स्वरूप के रूप ज्ञान के ज्ञान की सामग्री